

विकासशील अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, आर्थिक विकास में कृषि की भूमिका का विवेचन कीजिये ।

Ans. आर्थिक विकास एक सतत प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत कोई देश अपने उत्पादक साधनों का अधिकतम कुशल प्रयोग करके वास्तविक राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर (दीर्घकालीन)

वृद्धि करके ऊँचे स्तर की ओर बढ़ता है। इसके फलस्वरूप जीवन स्तर तथा सामान्य कल्याण में वृद्धि

होती है और देश के सभी नागरिक सुखी जीवन के लिए अधिकाधिक सुविधायें प्राप्त करते हैं।

किसी देश के आर्थिक विकास में कृषि निम्नलिखित भूमिका निभाती है.

(1) कृषि व गैर कृषि क्षेत्रों के लिए खाद्यान्नों की पूर्ति कृषि द्वारा खाद्यान्न उत्पन्न किया जाता है जिसका उपयोग कृषि व गैर कृषि दोनों क्षेत्रों में किया जाता है। यदि खाद्यान्न का उत्पादन देश की माँग के अनुसार नहीं होता तो उसका आयात करना पड़ता है जिससे विदेशी मुद्रा की माँग बढ़ जाती है। अन्य आवश्यक वस्तुओं के आयात में कठिनाई उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार कृषि खाद्यान्नों में आत्मनिर्भर बनाकर उद्योगों के विकास के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करती है।

(2) उद्योग के विकास के लिए कच्चे माल को उपलब्ध कराना : किसी देश के आर्थिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि वहाँ उद्योग-धंधों का विकास हो। उद्योग-धंधों के विकास के लिए कृषि कच्चे माल की पूर्ति करती है। कृषि चीनी उद्योग के लिए गन्ना, जूट उद्योग के लिए पटसन, वस्त्र उद्योग के लिए कपास उपलब्ध करती है। जब तक कृषि का समुचित विकास नहीं होता, उद्योग का विकास भी नहीं हो पाता। यदि विदेशों से कच्चा माल आयात करके उद्योगों का विकास किया जाता है तो देश का भुगतान सन्तुलन प्रतिकूल हो जाता है जिससे अर्थव्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(3) औद्योगिक वस्तुओं के लिए विपणन की सुविधा देना : अर्द्ध-विकसित देशों में कृषि का विकास किया जाता है जिससे कृषकों के आय-स्तर में वृद्धि होती है और वे उद्योग द्वारा निर्मित वस्तुओं की अधिक माँग करने लगते हैं। दूसरे, सड़क परिवहन से ग्रामों की आत्म-निर्भरता समाप्त हो जाती है और ग्रामीण नवनिर्मित वस्तुओं की अधिक माँग करने लगते हैं।

(4) निर्यात में महत्व अर्द्धविकसित देशों में कृषि द्वारा उत्पन्न वस्तुओं के निर्यात को प्रोत्साहन दिया जाता है। इसके निर्यात से अर्जित विदेशी मुद्रा द्वारा उद्योगों के विकास के लिए पूँजीगत वस्तुओं जैसे यन्त्र, कल व पुर्जे आदि का विदेशों से आयात किया जा सकता है। इस प्रकार कृषि के विकास से निर्यातों को बढ़ाया जा सकता है।

(5) श्रम की पूर्ति : अर्द्ध विकसित देशों में कृषि क्षेत्र में जनसंख्या की तीव्र गति से वृद्धि होने के कारण भूमि पर जनसंख्या का भार बढ़ जाता है और वहाँ अदृश्य बेरोजगारी दृष्टिगोचर होती है। उद्योगों के

विकास के लिए श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती है। अतिरिक्त श्रमिकों को कृषि क्षेत्र से हटाकर औद्योगिक क्षेत्र में हस्तान्तरित किया जा सकता है। इस हस्तान्तरण के दो लाभ होते हैं: (1) कृषि आय पर प्रति व्यक्ति निर्भरता कम हो जाती है। (2) श्रम की सीमांत उत्पादकता बढ़ जाती है।

(6) विस्तृत बाजार क्षेत्र की सम्भावना : कृषि क्षेत्र के विस्तार के साथ-साथ बाजार का भी विस्तार होने लगता है। विकसित कृषि द्वारा किसानों की आय बढ़ती है। इस बढ़ी हुई आय द्वारा वे टिकाऊ तथा अन्य उपयोगी वस्तुयें खरीदने लगते हैं; जैसे- जूता, कपड़ा, दवाइयाँ, साईकिल, रेडियो, ट्रॉजिस्टर, भवन निर्माण के लिए ईंट, लोहा तथा सीमेंट आदि। इस प्रकार इन वस्तुओं का बाजार विस्तृत हो जाता है। दूसरे, कृषि विकास के लिए कृषि आदाओं, जैसे-रासायनिक उर्वरक, उन्नत बीज, यन्त्र व उपकरण, कीटनाशक दवाइयाँ आदि की भी माँग बढ़ जाती है। तीसरे, बैंक बीमा कम्पनी, स्कूल, मरम्मत वर्कशाप तथा फुटकर व्यापार आदि सेवाओं की माँग भी बढ़ जाती है। इन सबका परिणाम यह होता है कि देश में विकास की दर तीव्र हो जाती है।

(7) पूँजी संचय में योगदान देना : अर्द्ध-विकसित देशों में निर्धनता का दुष्चक्र चलता रहता है जिससे पूँजी निर्माण की दर धीमी होती है। परन्तु कृषि व्यवसाय में थोड़ी पूँजी लगाकर सफल हुआ जा सकता है। किसान अपने रहन-सहन के स्तर को नीचा किये बिना पूँजी का संचय कर सकता है। इस पूँजी द्वारा परिवहन के साधनों का विकास, शक्ति व सिंचाई के साधनों का विकास अर्थात् सामाजिक पूँजी का निर्माण किया जा सकता है। दूसरे, शिक्षा, स्वास्थ्य, निवास एवं अन्य

विकासात्मक कार्यों का विकास भी किया जा सकता है। इनके विकास द्वारा देश का औद्योगीकरण सरलता से हो सकता है। एक लेखक के अनुसार, "कृषि में ऐसे ढंगों से उत्पादकता में वृद्धि करने की सम्भावना होती है जिनमें सीमित पूँजी विनियोग की आवश्यकता होती है। यह सम्भव हो सकता है कि आर्थिक संरचना तथा औद्योगिक विकास के लिए, अल्प-विकसित देशों में संलग्न व्यक्ति के जीवन स्तर में हास किये बिना, कृषि पूँजी प्रदान करे।"

सभी विकसित देशों का यह अनुभव है कि कृषि ने ही देश के विकास एवं तीव्र औद्योगीकरण के लिए एक सबल आधार तैयार किया है। सोवियत रूस तथा जापान में कृषि ने आधारभूत आधिक्य उत्पन्न करके और इस आधिक्य का गैर कृषि क्षेत्रों में प्रयोग करके इन देशों के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में भी कृषि, देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अन्य अल्पविकसित देश भी अपने देश में कृषि का विकास करके ही आर्थिक विकास की ओर अग्रसर हो सकते हैं।